सुगंधि द्रव्यों का वेदना निवारण एवं सौन्दर्यवर्द्धन में उपयोग

शिवांगी सिंह*, प्रो.आलोक श्रोत्रिय*, प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र नाथ पाण्डे*

सारांश

प्राचीन भारत की चिकित्सा की आयुर्वेद पद्धति में सुगंधित द्रव्यों का विस्तृत विवरण मिलता है। सुगंधित द्रव्य का उपयोग केवल सौंदर्य में ही नहीं अपितु चिकित्सा में भी किया जाता है। आयुर्वेद में सुगंधित द्रव्य सुगंध चतुष्टय के रूप में उल्लिखित है। प्राचीन भारत से ही सुगंधित द्रव्यों से बने उत्पाद मानव के स्वास्थ्य और कल्याण के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चिकित्सा सुगंधित द्रव्यों विस्तृत विवरण भावप्रकाश निघंटू (कपूर वर्ग में 65 द्रव्यों का वर्णन किया गया है। वृहदसंहिता (सप्तसप्ततितमोध्याय मे गंधयुक्ति ने प्राप्त होता है इसके अतिरिक् त गुणरत्नमाला (अर्थ तृतीय कपूराआदि, सुगन्धवर्ग:) वनऔषधिगुण (अनेकों सुगंधी द्रव्यों का वर्णन है) आदि पुस्तकों से भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होता है। इनमें से कुछ सुगंधित द्रव्य वर्तमान नित्य जीवन में भी प्रयुक्त किए जाते हैं, उदाहरण, सुगंध तेल (असेंशियल ऑयल, अरोमा इत्यादि के रूप में)। सुगंधित द्रव्यों का श्वसन तंत्र व केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर भी प्रभाव पड़ता है ,अतः आवश्यक हो जाता है कि दुष्प्रभाव रहित सुगंधित द्रव्यों की उपलब्धता हो,जो इस शोधपत्र का उद्देश्य है।

सुगंधित द्रव्यों के विषय में विस्तृत विवरण प्राचीन भारतीय ग्रंथों में प्राप्त होता है। मदनपाल निघंटु,अष्टांग हृदय सूत्रम,भावप्रकाश निघंटु, बृहद संहिता, गुणरत्नमाला,वनोषधि दर्पण:में प्राप्त होता है।सुगंधी द्रव्यों का उपयोग वेदना निवारण के अतिरिक्त सौंदर्यवर्धन में भी प्रयुक्त किया जाता है।वास्तव में वेदना व रोग मुक्त शरीर सौंदर्य के गुण से परिपूर्ण माना गया है।अष्टांग हृदय सूत्रम में तैल वर्ग में सरसों, नीमगिरि, अलसी-कुसुमभ तेल, बहेड़े की गिरी का वर्णन है। जो वर्तमान में प्रयुक्त हो रहे एसेंशियल ऑयल व अरोमा ऑयल का प्राथमिक रूप है।भावप्रकाश निघंटु,मदनपाल निघंटु (कपूर वर्ण के अंत में गंध फैलाने वाले पुष्पों का उल्लेख किया गया है)। गुणरत्नमाला आदि ग्रंथों में सुगंधित द्रव्यों के लिए स्वतंत्र रूप से कपूर वर्ग नामक अध्याय है। जिसमें सुगंधित द्रव्य का विस्तृत विवरण दिया गया है।

इन तीनों ग्रंथों में दिए गए द्रव्य का नामकरण लगभग समान है। भावप्रकाश निघंटु के कपूरवर्ग: में सुगंधि द्रव्यों का विषद वर्णन है। मदनपाल निघंटु (कपूरवर्ग: के अंत में गंध फैलाने वाले पुष्पों का उल्लेख किया गया है।

गुणरत्नमाला आदि ग्रंथों में सुगंधित द्रव्यों के लिए स्वतंत्र रूप से कपूरवर्ग: नामक अध्याय है, जिसमें सुगंधि द्रव्य का विस्तृत विवरण हैं।

वृहद् संहिता में गंधयुक्ति:अध्याय सुगंधि द्रव्यो की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

शब्दकुंजिका : सुगंध, तेल, कपूरवर्ग, द्रव्य, तंत्रिका तंत्र, व्याघ्रनख

---

* शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक, मध्य प्रदेश, Email. Shivangihistory1996@gmail.com

** Dean Academics, Prof. and Head, Deptt. of AIHC and Archeology, IGNTU, Amarkantak

*** Adjunct Professor, M.G. Ay. C.H. & Research Centre, Salod, D.M.I.H.E.R., Wardha (M.S.)

शोध प्रविधि

पुस्तकालय द्वारा प्राचीन भारतीय आयुर्वेद आधारित ग्रंथ भावप्रकाश निघंटु, गुणरत्नमाला, मदनपालनिघंटु, बृहदसंहिता, अष्टांगहृदयस्तोत्र एवं वर्तमान प्रभाव को समझने हेतु वर्तमान शोधपत्र एवं वर्ल्ड वाइड वेब।

उद्देश्य

वर्तमान काल में सुगंधित द्रव्य का उपयोग वेदना निवारण व सौंदर्यवर्धन में उपयोग किया जाता है। वर्तमान काल में सुगंधित द्रव्य, स्प्रे, अनुलेपन के रूप में बाजार में उपलब्ध है। सुगंधित द्रव्य का मनुष्य के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। अतः आवश्यक है कि बाजार में प्रभावशाली किंतु दुष्परिणाम रहित सुगंधित द्रव्य की उपयोगिता हो, प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन भारत में प्रयुक्त किए जाने वाले सुगंधित द्रव्यों का विस्तृत विवरण है। जिस के संबंध में नैदानिक अनुसंधान कार्य कर दुष्प्रभावों को अपेक्षाकृत कम किया जा सके।

प्राचीन साहित्य में सुगंधि द्रव्यों का वेदना निवारण

भावप्रकाश निघंटु में उल्लेखित सुगंधि द्रव्य [1]

भाव प्रकाश निघंटु के कपूर वर्ग अध्याय में कुल 55 द्रव्यों का वर्णन किया गया है। है। कर्पूर, कस्तूरी, चंदन, बड़ी गुमची, देवदारू, पत्रक, अगर, धूप सरल, तगर, पदाख़, गूगल, उबेद नाम, गूगल, सरलनिर्यास, (चीङ का गोद, तारपीन का तेल) राल, कुंदुरू, लोहबान, सिलारस, जायफल, जावित्री, लौंग, बड़ी केसर, गोरोचन, नख नखी सुगंधवाला, वीरणखस जटामांसी, छरीला, मोथा, कचूर मुरा, कपूर कचरी, प्रियंगु, रेणुका, गठिवन भटेउर, तालीसपुत्र, शीतलचीनी, गंधमालती, लायक एलवालुक, केवटीमोथा, स्पृका

मदनपाल निघंटु में उल्लेखित सुगंधि द्रव्य [2]

कस्तूरी, चंदन, अगुर, कुंकुम, सिंहलक, एलवालुक, जातीफल, जातीपत्र लवण, कंकोल, इला (छोटी इलायची) स्थूला (बड़ी इलायची), दालचीनी, तेज पत्र, नागकेसर, तालीसपत्र, सरल, श्रीवास, बालक, मासी (बालछड़) उशीर, रेणुका, प्रियंगु, परीपेल, शैलेयक, लामजजक, कुंदरू, गूगुलु, राल, थुनेरा, चौरक, मुरा, कर्चूर स्पृका, तुलसी, नालिका, पद्माक, पुंडरीक, तगर, गोरोचन, पतङपपटी, कुमुदिनी, श्वेतकमल, नीलकमल, कल्हार, कमलेश, कमलबीज, मृणाल, चमेली, मालती, जूही

गुणरत्नमाला में उल्लेखित सुगंधि द्रव्य[3]

गुणरत्नमाला में कर्पूराआदि सुगंधवर्ग: के अंतर्गत कपूर, कस्तूरी, गोरासाष (जबाद कस्तूरी) मुसुकदाना (लाल कस्तूरी) चंदन, काला अगर, अगर तैल, देवदारू, गुगली, गुगुरी, राल, सलई गूगल, शिलरस, जायफल, लवंग, इलायची, तज, पत्रक, नागकेशर केसर, गोरोचन, नख, सुगंधबाला, नेत्रबाला, मोथा, नागर मोथा, कचू, गंध प्रियंगु, रेणुका, मरीज, गठिवन, पर्परी पर्पटी, नलिका, मुंडेरीरणखस जटामांसी

प्राचीन साहित्य में सुगंधि द्रव्योंका सौन्दर्यवर्द्धन में उपयोग

बृहद संहिता में उल्लेखित सुगंधि द्रव्य[4]

बृहद संहिता में गंध युक्ति में सुगंधित द्रव्यों का प्रयोग केवल शरीर सौंदर्य वर्धन पर ही नहीं अपितु केशो, दंतो (दुर्गंध को दूर करना दंतो को मजबूत करने पर भी करने पर भी पर्याप्त विवरण प्राप्त होता है। केश काले होने के पश्चात शिर: स्नान (दालचीनी, कूठ रेणुका नलिका स्पृका, बोल, तगर, नाग केशर, गंध पत्र इसका संभाग चूर्ण) सिर की दुर्गंध को दूर करके अंतपुर में जाएं अपनी के साथ राजा राज्य के सुख का सेवन करें। इसके अतिरिक्त बृहद संहिता के 6 श्लोक में मंजिष्ठा, व्याघ्रनख, शुक्ति, दालचीनी कूठ, इन सब को सम्मिलित चूर्ण मीठे तेल में डालकर धूप में तपाने से यह तेल चंपा के तेल की सुगंध के समान हो जाता है। अगर, गंध पत्र, तुरुष्क (सिहक) के 2,3,5,8 भाग। प्रियंगु, मोथा, रस (बोल) केश, होव्रेर के 5,2,8,3 भाग। स्पृक्का, त्वक् अगर, मांसी 1,6 भाग। श्वेत चंदन, नख, श्रीवास, कुंदुरू 1,7,6,4 भाग इन 16 द्रव्यो पैसे दिए गए किन्ही दो भागों का योग 18 हो तो इन द्रव्यों को लेकर अनेक प्रकार की गंध के योग बनते हैं। इन गधों को नखत अगर जायफल, कपूर, कस्तूरी का उद्बोधन करके गुड, सिंह के नख धूप कर कच्छपुट में रखें इसके पश्चात इनमें कोई चार द्रव्य जायफल, कस्तूरी, कपूर से सुवासित के पश्चात परिजात के पुत्र के समान सुगंध प्राप्त होती है। सहकार, आम्र रस व शहद में भीगा कर रखें इस गंध को **सर्वतोभद्र** कहते हैं। इसमें श्रीवास मिश्रण से धूप बनता है, जो सौंदर्य में शरीर की सुगंध को बढ़ाने में प्रयुक्त किया जाता है। मोथा, नेत्रवाला, शैलेयक, कचूर, खास, नागकेसर, फुल, व्याघ्रनख, स्पृका, दमनक, नख, तगर, धनिया, कपूर, चोर, श्वेत चंदन 16 गंध है। जिसमें से चार द्रव्यों को लेकर 1,2,3,4 भाग अदल बदल कर लेने से गंधावर्ण होता है। इन गंधो से 1,74,000,7,20 प्रकार के गंध बनते हैं। इन गधों को श्रीवास, राल, गुड, नख का धूप दें परंतु इन चारों को अलग-अलग धूप देवे। पश्चात कपूर व कस्तूरी, हरड़ के चूर्ण गोमूत्र में 7 दिन भिगोकर इसमें गंधोदक डाले व इलायची, त्वक्, पत्र, अंजन, शहत, काली मिर्च, नागकेसर, कूट का सम भाग लेकर गंधजल में दंत काष्ठ भिगोकर रखें इसके अतिरिक्त जायफल 1/4, इलायची 1, कपूर 3 भाग का चूर्ण दातों पर उपयोग करें इससे दांतो की मजबूती के साथ मुख की कांति बढ़ती है, मुख सुगंधयुक्त रहता है। इसके अतिरिक्त मुख को सुगंधित करने के लिए विभिन्न प्रकार के पान का वर्णन बृहद संहिता में किया गया है।

सुगंध तेल

सुगंध तेल के अंतर्गत तीन प्रकार की श्रेणी है, प्रथम वह जो सर्वाधिक प्रयोग की जाती है, इनक अंतर्गत लैवेंडर तेल जिसका प्रतिशत लगभग 30%। द्वितीय वह है, जिनका प्रथम अपेछा कुछ कम उपयोग की जाती है, इनके अंतर्गत, साइट्रस परिवार (नीबू, नारंगी, अंगूर) जिनका प्रतिशत (24.4%) है। तृतीय श्रेणी के सुगंघ तेल प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के तेलों से निम्न प्रतिशत में उपयोग की जाती हैं, इनके अंतर्गत रोज़ीमेरी सुगंध तेल (5.51जाती%) उपयोग में लाई जा रही हैं। इनके अतिरिक गुलाब, देवदारु, दालचीनी, केलोमाइन के सुगंध तेल नून्तम प्रतिशत में उपयोग में लाये जाते है। [5]

सुगंध तेलों के उत्पादन की प्रक्रिया

एकाग्रता और शुद्धिकरण विभिन्न भौतिक-रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा किया जा सकता है, जिन्हें पारंपरिक रूप से तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है: [7]

- आसवन (हाइड्रो-आसवन, भाप आसवन या शुष्क आसवन)
- निष्कर्षण (माइक्रोवेव और अल्ट्रासाउंड सहायता से प्राप्त निष्कर्षण, विलायक निष्कर्षण, सुपरक्रिटिकल द्रव निष्कर्षण, एनफ़्लेरेज या मैक्रेशन)
- दबाना (यांत्रिक)।

लैवेंडर सुगंध तेल सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला सुगंध तेल हैं, यह भाप या जल-आसवन विधियों के माध्यम से पृथक किया जाता है। हालाँकि, साइट्रस परिवार फलों के छिलके से उत्पादित तेल के लिए, आमतौर पर कोल्ड-प्रेस्ड या व्यक्त तेल निष्कर्षण विधि का उपयोग किया जाता है। विलायक निष्कर्षण विधि का उपयोग कुछ पौधों जैसे गुलाब, नेरोली, रजनीगंधा, चमेली,एवं ओक की सामग्रियों के लिए भी किया जाता है। जो गर्मी (भाप में) प्रतिकुलहैं या ठंडे दबाव के अधीन हो सकते हैं। अधिकांश पौधों में, के प्रमुख घटक टेरपेनॉइड और फेनिलप्रोपेनॉइड डेरिवेटिव हैं।[5] टेरपेनोइड्स मुख्य घटक हैं (लगभग 80% शामिल हैं), लेकिन फेनिलप्रोपेनॉइड सुगंध तेलों को स्वाद और गंध प्रदान करता है। टेरपेनॉइड द्वारा एक्जिमा, जलन या कीड़े के काटने जैसी त्वचा की स्थितियों से जुड़ी जलन और सूजन को कम कर सकते हैं, सुगंधि पौधों द्वारा उत्पादित प्राकृतिक रूप से सुगंधित तैलीय तरल पदार्थ हैं, जो उनके सार या गंध के लिए जिम्मेदार होते हैं। सुगंध तेलों को पौधों के विभिन्न भागों पत्तियां, छाल, फूल, कलियाँ, बीज और छिलके से निकाला जा सकता है, जिसमें उनके उपयोग की विधि भी शामिल है। निष्कर्षण के दौरान, अधिकांश वाष्पशील तेल आमतौर पर और आसानी से साइट्रस परिवार के फलों के छिलके से, कोल्ड-प्रेस्ड या व्यक्त पौधों की सामग्री से प्राप्त होते हैं जो गर्मी (भाप में) सहन नहीं कर सकते हैं। चूंकि सुगंध तेल हाइड्रोकार्बन वाष्पशील यौगिकों का एक केंद्रित हाइड्रोफोबिक प्रधान मिश्रण है, जो कमरे के तापमान पर आसानी से वाष्पित हो जाता है, उन्हें वाष्पशील तेल के रूप में भी जाना जाता है। हालाँकि, उत्पादित तेलों हेतु निष्कर्षण विधि का आमतौर पर उपयोग किया जाता है। कुछ के लिए विलायक निष्कर्षण विधि का भी उपयोग में ली जाती है। सुगंधि द्रव्य वह होते हैं, जिनमें सुगंधित यौगिक होते हैं जो मूल रूप से सुगंध तेल हैं वे कमरे के तापमान पर अस्थिर होते हैं। यह सुगंधि तेल गंधयुक्त, वाष्पशील, हाइड्रोफोबिक और अत्यधिक केंद्रित यौगिक हैं।

सुगंध तेलों के उत्पादन हेतु विभिन्य यौगिको के भाग का उपयोग [7]

- पत्तियां (नीलगिरी, थाइम)
- जामुन (जुनिपर)
- घास (पामारोसा, सिट्रोनेला)
- फूलों के शीर्ष (लैवेंडर)
- पंखुड़ियाँ (गुलाब, चमेली, इलंग)

- जड़ें (वेटिवर)
- फल (नारंगी, नींबू)
- रेजिन (लोबान, लोहबान)
- लकड़ी (देवदार, चंदन, शीशम)
- छाल (दालचीनी)
- बीज (बादाम, जीरा)
- प्रकंद (अदरक)
- छिलके (नींबू, संतरा)।
- पुष्प (यलंग)[7][10
- पुष्प (चमेली)[7,10]
- पत्तिया (यूकेलिप्टस)[10]
- पत्तिया (सुगंधरा)[10]
- पत्तिया (जेरेनियम)[10]
- लकड़ी (देवदारु)[10]

सुगंध तेल का वर्तमान में उपयोग

प्राचीन काल से ही का उपयोग उनकी व्यापक जैविक गतिविधियों के कारण कई बीमारियों के इलाज के लिए उपचार के रूप में किया जाता रहा। नैदानिक एवं गैर नैदानिक अध्ययनों से पता चला है कि तंत्रिका तंत्र में अलग-अलग औषधीय प्रतिक्रियाएं होती हैं, जिससे चिंताजनन और एंटीकॉन्वल्सेंट प्रभाव होते हैं। इसके अतिरिक्त नैदानिक परीक्षणों ने सहवर्ती मनोवैज्ञानिक प्रभावों के साथ रक्तचाप, हृदय गति, श्वसन दर, मस्तिष्क तरंगों की संरचना और कोर्टिसोल सीरम स्तर जैसे शारीरिक मापदंडों में प्रभाव का प्रदर्शन किया है। मानव केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में उनके प्रभाव को मान्य करने के लिए अधिक नैदानिक अनुसंधान की आवश्यकता है इससे अवसाद, चिंता और मनोभ्रंश जैसी मानसिक बीमारियों के इलाज के लिए सुगंधि तेल आधारित दवा उपयोगी हैं। सुगंध तेल बीमारियों के अतिरिक्त सौन्दर्य में भी सहायक होते है,क्षतिग्रस्त त्वचा और गहरा पोषण प्रदान करते हैं। लैवेंडर तेल और चाय के पेड़ के तेल में सूजन-रोधी गुण होते हैं अथवा मुँहासा तेल पौधों से निकाले गए प्राकृतिक सुगंधित वाष्पशील तेलों का मिश्रण हैं। सुगंध तेलों का उपयोग प्राचीन है। वर्तमान में सुगंध तेलों का उपयोग पारंपरिक और मानार्थ दवाओं, अरोमाथेरेपी, मालिश चिकित्सा, सौंदर्य प्रसाधन, इत्र और खाद्य उद्योगों में किया जाता है। सुगंधि तेलों के स्क्रीनिंग प्रभाव का विश्व भर में अध्ययन किया गया है। वे कई प्रकार की जैविक गतिविधियों का प्रदर्शन करते हैं, जैसे कि ज्वररोधी, जीवाणुरोधी, विषाणुरोधी, प्रति उपचायक (एंटीऑक्सिडेंट), वायुरोधी (एंटी-इंफ्लेमेटरी), कैंसररोधी, बुढ़ापा विरोधी (एंटीएजिंग), न्यूरोप्रोटेक्टिव (एक प्रकार का उपचार)[10] । स्कोपिंग समीक्षा में, हम वाष्पशील तेलों और तंत्रिका तंत्र पर उनके प्रभावों का 10 साल का अद्यतन व्यापक मूल्यांकन प्रदान करते हैं, इन अध्ययनों में कई परिणाम सामने आए, जिनमें तनाव-

विरोधी, चिंता-विरोधी, एनाल्जेसिक, संज्ञानात्मक और स्वायत्त प्रभाव शामिल हैं। कुछ सुगंध तेलों ने न्यूराइट के विकास को प्रेरित करने की क्षमता के साथ विकास संबंधी लाभ प्रदर्शित हैं। न्यूरोट्रांसमीटर रिसेप्टर स्तर को सुगंध तेल अनुप्रयोग द्वारा भी संशोधित किया जा सकता है। शारीरिक परिणामों के लिए उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रदर्शन, भावनात्मक मॉड्यूलेशन। शरीर क्रिया विज्ञान (पैथोफिजियोलॉजिकल) स्थितियों के लिए, दर्द, अवसाद, चिंता, तनाव, नींद विकार, मानसिक थकान, उत्तेजित व्यवहार और जीवन की गुणवत्ता को मापा गया। निष्कर्ष में सुगंधि तेल ने तंत्रिका तंत्र पर आशाजनक प्रभाव दिखाया, जिसे कार्यात्मक खाद्य पदार्थों, पेय और वैकल्पिक चिकित्सा में उनके उपयोग के लिए लागू किया जा सकता है। केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के लिए बुनियादी प्रसंस्करण केंद्र बनाता है। यह परिधीय तंत्रिका तंत्र से सूचना प्राप्त करता है और उसे सूचना भेजता है की मस्तिष्क रीढ़ की हड्डी से भेजी गई संवेदी सूचनाओं को संसाधित और व्याख्या करता है और इस आधार पर, यह हमारे बाहरी वातावरण की व्याख्या और शरीर की गतिविधियों पर नियंत्रण की उत्पत्ति प्रस्तुत करता है।विभिन्न अंगों के आंतरिक अंगों तक सूचना प्रसारण और संचार की जटिल प्रक्रिया कई बार विभिन्न बाहरी उत्तेजनाओं से प्रभावित होती है, जिनमें से एक सुगंध द्रव्य (सुगंधित औषधि) का अनुप्रयोग है। मानव मस्तिष्क और उसकी भावनाओं पर सुगंधित दवाओं के प्रभाव का अभी भी विश्लेषण किया जाना शेष है। स्वस्थ और रोगग्रस्त लोगों में मनोदशा, सतर्कता और मानसिक तनाव में इसकी भूमिका ऐसे क्षेत्र हैं जहां वैज्ञानिक समुदाय को एक अध्ययन[5] से सौंदर्य प्रसाधनों,केंद्रीय तंत्रिका, मनोवैज्ञानिक विकारों एंवम जीवनशैली संबंधी विकारों के प्रबंधन में सुगंधि द्रव्य के दायरे का पता चला है। सुगंधि द्रव्य द्वारा उल्लिखित औषधीय कार्रवाई की विस्तृत श्रृंखला जैसे प्रतिउपचायक, चिंतारोधी, सेरोटोनिन हार्मोन पर कार्रवाई, सीएनएस-उत्तेजक और सीएनएस-अवसादक गतिविधि के साथ द्रव्य स्वास्थ्य विकारों के प्रबंधन और जीवनशैली के तौर-तरीकों में बदलाव में प्रभावकारिता साबित हुए हैं। इससे मानक जीवन की गुणवत्ता में और वृद्धि होगी और जीवनकाल में वृद्धि होगी। इनमें अज्ञात ट्रेस घटक शामिल होते हैं जिन्हें तेल की गंध, स्वाद और जैव सक्रियता को काफी हद तक बदलने के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है सुगंध तेलों में विशिष्ट स्वाद और सुगंध गुण होते हैं, जैविक गतिविधियां होती हैं और कॉस्मैटिक्स, स्वाद और सुगंध, मसालों, कीटनाशकों और प्रतिरोधी, साथ ही हर्बल पेय पदार्थों जैसे कई उद्योगों के अलावा अरोमाथेरेपी और स्वास्थ्य देखभाल में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। उपलब्ध स्रोत के आधार पर यह पाया गया कि बड़ी संख्या में लोग विभिन्न प्रकार के मानसिक विकारों, विशेषकर अवसाद, चिंता और अनिद्रा से पीड़ित हैं। ये मानसिक बीमारियाँ और संबंधित जीवनशैली संबंधी विकार न केवल लोगों के दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं, बल्कि समाज के लिए एक बड़े आर्थिक बोझ का कारण भी बनते हैं। पिछले दशकों में, बढ़ती जांच ने जड़ी-बूटियों के मनोचिकित्सा विज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया है। जड़ी-बूटियाँ संभवतः अवसाद, चिंता और नींद संबंधी विकारों में मदद करती हैं। इसलिए, भावप्रकाश निघंटु [6] के कर्पूरादि वर्ग के तहत उल्लिखित सुगंधि द्रव्यों को समझने में एक विनम्र परीक्षण किया गया था जो चिकित्सी अध्ययनों के अनुसार, विश्व भर में तंत्रिका तंत्र पर सुगंधि तेलों के प्रभावों का व्यापक रूप से अध्ययन किया गया है। सुगंध तेलों को माइक्रोएन्काप्सुलेशन विधि द्वारा भी रोगी के अंदर प्रविष्ट की जा रही है।[8]

यह तीन श्रेणी में विभक्त हैं।

- रासायनिक प्रक्रिया
- भौतिक- यांत्रिक प्रक्रिया
- फिजियोकैमिकल प्रक्रिया

विभिन्नय सुगंधि तेल एवं उनका उपयोग

विभिन्नय सुगंधि तेल का वेदना निवारण में उपयोग [5]

नीबू, अंगूर के बीज का तेल

लेवेंडर[5],[10],रोजीमेरी[8],संतरा तेल[5]

अन्त:श्वासन प्रक्रिया द्वारा चिकित्सा में इसका उपयोग किया जाता है। यह तेल हेमोडायलिस के दौरान चेतना को नष्ट करता है। इसके अतिरिक्त रोजीमेरी तेल निगलना संज्ञानात्मक कोशल को बढाता हैं,लेवेंडर तेल से मालिश करने के परिणाम स्वरुप हृदय की गति एवं रक्तचाप सामान्य होती है।

दालचीनी की पत्तो का तेल[8]

यह रोगाणुविरोधी तत्त्व हैं एवं दूध पेय पदार्थ संवेदी पहलु है एवं मधुमेह न्युरोपेथी मेंइसका उपयोग किया जाता है. चिकित्सा में इसका उपयोग निगल जाने बतलाया गया है।

नीबू लेप (बाँम)

मधुमेह न्युरोपेथी में इसका उपयोग किया जाता है. अंत:क्षेपण (इंजेक्शन) प्रक्रिया द्वारा यह क्रियान्वित किया जाता हैं।

बरगामोट तेल

अन्त:श्वसन प्रक्रिया द्वारा मनुष्य शरीर में प्रविष्ट कराया जाता हैं, जिससे पीड़ा,बेचैनी में राहत देता हैं।

जोज़ोबा,पिपरमेंट,तुलसी,हेलीक्रीसम तेल

थकान,ऊर्जा में कमी इत्यादि समस्या को दूर करता हैं,इसका प्रयोग अंत:श्वसन प्रक्रिया द्वारा किया जाता हैं।

धनिया तेल

अंत: क्षेपण प्रक्रिया द्वारा शरीर में प्रविष्ट कराया जाता हैं,एवं मुख्यत: पीड़ाहर में उपयोग किया जाता हैं।

युजू तेल

अंत:श्वसन प्रक्रिया द्वारा उपयोग कर, नकरात्मक भावनाओं को कम करना,तनाव का दमन एवं स्वायत्त तंत्रिका तंत्र जो शरीर की अवचेतन क्रिया को नियंत्रित करता हैं।

एकोरस टाटरीनोवी तेल

इंट्रापेरिटोनियल इंजेक्शन अंत:शिरा अंत:क्षेपण प्रक्रिया का उपयोग कर अवसादरोधी, शरीर में ऐठनरोधी हैं, युवावस्था को प्राप्त करने में भी सहायक हैं।

एकोरस जेमिनी, एकोरस केलमस प्रकंद

इसका उपयोग तंत्रिका तंत्र में वृद्धि का कारक एवं न्युरोफलामेंट्स अर्थात तंत्रिका चालक वेग को प्रभावित करता हैं।

(एकोरस एक वनस्पति परिवार हैं)

सिट्रोनेलाल तेल

पाव इंजेक्शन द्वारा उपयोग किया जाता हैं, अरोमाफेशियल में इसका प्रयोग किया जाता हैं, चेहरे की तंत्रिका में पीड़ा जो ट्राइजेमिनल तंत्रिका द्वारा होती हैं,उसका निवारण करता हैं।

बरगामोट,चंदन[10],लोहबान[10],मंदारिन,लेवेंडर,मीठा संतरा,पेटिटग्रेन

अंतश्वसन द्वारा शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है, परिणामस्वरुप अनिद्रा की समस्या का निवारण होता हैं।

विभिन्नय सुगंधि तेल का सौन्दर्यवर्द्धन में उपयोग [7]

नेरोली सुगंध तेल

नेरोली के फूल से निकाला जाता है। नींबू का पेड़ तीन अलग-अलग प्रकार के सुगंध तेलों का उत्पादन करता है। नेरोली सुगंध तेल, फूल से भाप-आसुत होता है, पेटिटग्रेन तेल पत्तियों से उत्पन्न होता है और संतरे का तेल संतरे के छिलके से आता है। नेरोली एक हल्के पीले से कॉफी भूरे रंग का सुगंध तेल है जिसमें मीठी, ताज़ा और फूलों की गंध होती है। अपनी खुशबू के कारण यह इत्र और साबुन में सबसे महत्वपूर्ण तेलों में से एक है। तेल में रोगाणुरोधक गुण होते हैं, जो अवसादरोधी, एंटीसेप्टिक, कार्मिनेटिव, एंटीस्पास्मोडिक और शामक गुण होते है। सौंदर्य प्रसाधनों में, इसका उपयोग आमतौर पर संवेदनशील या तैलीय अथवा थकी त्वचा को ताज़ा करने के लिए किया जाता है।

रोजीमेरी सुगंध तेल [7]

स्नान नमक, स्नान तेल, जैल, मलहम में यह घटक होता है। यह कॉस्मेटिक उत्पादों जैसे लैवेंडर पानी,कोलोन पानी और साबुन में सुगंध के रूप में भी पाया जा सकता है। रोज़मेरी का तेल बालों की देखभाल के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, क्योंकि यह बालों को पोषण देता है, बालों के विकास को बढ़ावा देता है एवं रूसीनिवारक है। बालों के झड़ने के उपचार में भी इसका उपयोग कीया जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इसका कार्य मिनोक्सिडिल, एंटीहाइपरटेंसिव वैसोडिलेटर दवा के समान है, जो क्षतिग्रस्त बालों के रोमों को पुनर्जीवित करता है। रोजीमेरी तेल रक्त वाहिकाओं को विस्तृत करता है एवं उन्हें खोलता है, रोमों को रक्त और पोषक तत्व अधिक उपलब्ध कराता है जो नए बालों के उत्पादन के लिए प्रेरित होते हैं।

टीट्री (चाय सुगंध तेल) [7],[10]

यह प्राकृतिक रूप से भी त्वचा पर लगाए जा सकते हैं, अर्थात केवल पत्तियो को भी कुचल कर उपरुक्त

स्थान पर उपयोग कर लेने से भी लाभ होता है,क्योंकि यह जीवाणु विरोधी होते हैं, एवं मुंहासे के उपचार में उपयोगी होते हैं।

पुदीना सुगंधित तेल[7,8] ,नीलगिरी सुगंध तेल[8]

प्रसाधन में इस तेल का उपयोग साबुन में किया जाता है। स्वाद गुण के कारण दंतमंजन, मुखमार्जक, चुइंगम के रुप में प्रयुक्त होता है। परिणामस्वरूप उपयोगकर्ता को ताजगी का अनुभव होता है। नीलगिरी का तेल मुख को ताजगी प्रदान करता हैं।

इटैलिकम सुगंधित तेल[7]

सौंदर्य में दीर्घकालिक अवधि तक युवा दिखने के लिए इटैलिकम तेल का उपयोग वर्तमान में किया जा रहा है, क्योंकि यह त्वचा में रक्त परिसंचरण की बढोत्तरी करता है, जिससे त्वचा पुनर्जीवित हो उठती है। परिणास्वरूप महीन रेखाएं, झुर्रियां इत्यादि घटने लगती हैं।

गुलाब सुगंधित तेल[7]

गुलाब सुगंध तेल जीवाणु विरोधी है, जिससे मुहांसों के जीवाणुओं को नष्ट करती है। यह त्वचा को हाइड्रेट रखता है। अतः शुष्क त्वचा वाले व्यक्ति त्वचा में आवश्यक नमी बनाए रखने हेतु गुलाब सुगंधित तेल का उपयोग लाभकारी होता है।

देवदार सुगंध तेल[7],[10]

मुहासों का निवारण, एक्जिमा का इलाज करता हैं,रूसी को कम करता हैं एवं खासी ,गठिया रोगों पर नियंत्रण प्रदान करता हैं।

यूकेलिप्टस सुगंध तेल[10]

त्वचा को निखरता है, शिर में जीवाणुरोधी प्रभाव दिखा कर खुजली रुसी इत्यादि को दूर करता हैं।मांसपेशी की पीढ़ा का निवारण करती हैं।

निष्कर्ष

सुगंध तेलों और उनके यौगिकों के प्रति एलर्जी प्रतिक्रियाओं की संख्या की तुलना इन पदार्थों को व्यापक रूप से लागू करने से की जाती है, तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इत्र और कॉस्मेटिक उत्पादों में सुगंध तेलों का उपयोग अधिकांश आबादी के लिए सुरक्षित माना जा सकता है। सुगंध तेल में अनेक जौविक गुण है, जिनमें जीवाणुरोधी,विषाणुरोधी, एंटीऑक्सिडेंट शामिल हैं, इनका उपयोग स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं कल्याण के लिए किया जाता है। इसने सुगंध तेल के उपयोग केवल सुगंध के उपयोगिता में ही नहीं अपितु वे बालों और त्वचा की देखभाल के उत्पादों के साथ-साथ सूत्रीकरण में प्राकृतिक परिरक्षकों में व्यापक हैं, जिससे उपयोग की लगभग अंतहीन सूची बन गई है एवं,यह लगातार बढ़ रही है। इसलिए सुगंध तेल शारीरिक स्वास्थ्य के इष्टतम संतुलन में योगदान देने वाले आवश्यक घटक बन गए हैं। सौंदर्य प्रसाधन में सुगंध तेल का उपयोग न केवल

उत्पादों से जुड़े कॉस्मेटिक लाभों और संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका के दृष्टिकोण से एक लाभ है, बल्कि वाणिज्यिक उत्पादों की विपणन छवि में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सुगंध तेल आधारित कॉस्मेटिक उत्पादों के विकास में नए मार्ग प्रसस्तीकारण के लिए जैविक प्रदर्शन और उनके संभावित विषैले पहलुओं के अंतर्निहित सबसे बुनियादी आधारों की बेहतर समझ की दिशा में अनुसंधान को आगे बढ़ाना आवश्यक हो जाता है। अत: सुगंध तेलों के वास्तविक प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए अधिक व्यवस्थित परीक्षण करना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भावप्रकाशनिघंटु- व्याख्याकार,चुनेकर,डॉ. कृष्णचंद्र, चौखाम्भा भारतीय अकादमी ,वाराणसी,पुनमुद्रित 2002
2. मदनपालनिघंटु-व्याख्याकार, पंडित रामप्रसादउप्पाध्य, खेमराज कृष्णदास प्रकाशन बम्बई, संवत् 206,
3. गुणरत्नमाला- व्याख्याकार,पाण्डेय,डॉ. कैलाशपति एवं सिंह, डॉ. अनुग्रह नारायण,चौखाम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी,विक्रम संवत् 2062,
4. वृहदसंहिता- अनुवादक, मिश्र, पंडित बलदेव प्रसाद,लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापखाना कल्याण मुंबई,संवत्1954
5. Sattayakhon apsorn, Sineewanlaya wichit, Koomhin phanit, The Effect of Essential oils on the Nervous System: A Scoping Review.Molecules 2023,28,3771
6. Vaishali, Rao, Madhusudan, A Review of sudandhi dravyas Mentioned in Bhavaprakash, International Ayurvedic Medical Journal, ISSUN:2320-5091,
7. Guzman eduarda, Lucia Alejandra, Essential oils and their Individual Components Cosmetic Products, MDPI, Journals/Cosmetics/Volume 8/ISSUE/published 2021. The Article belongs to the special Issue Paper in Cosmetics, 2021
8. Application Of Microencapsulated Essential oils in Cosmetic and Personal Healthcare Products- review international Journal Of Cosmetic Science, Volume 38,ISSUE 21, published, 29 April 2015, Willy Online library
9. Sarkic asja, Stappen Iris, Essential Oils And their Single Compounds in Cosmetics – A Critical Review, Journals /Cosmetic 2018/Volumes 5/ISSUE 1, Published 12 January 2018, the article belongs to special ISSUE a critical view on natural substance in personal care products
10. Kashyap Neha, Kumari amrita, Raina Neha, Zakir foziyan, Gupta Madhu, Prospects of essential oils loaded Nanosystems for skincare, Science direct, Phytomedicine plus, Volume 2, ISSUE I, February 2022, department of Pharmaceutics, Delhi, Pharmaceutical Science and research university, Pushp Vihar Sec-3, New Delhi.

❐